Who were Semites — Give an account of Sargon of Akkad:

सेमेटिक ... जो लोग सेमेटिक भाषा बोलते थे, विद्वान 'स्क्लोजर' ने ही सभी उन लोगों को उन्हें सेमाइट्स कहा जाता था। इस तरह भाषा विज्ञान की दृष्टि से Semetic भाषा का प्रयोग करने वालों को सेमाइट्स कहना उचित प्रतीत होता है, चूँकि इस्लाम प्रसार के पूर्व सेमेटिक भाषा का प्रयोग सीमित क्षेत्रों में होता था, इसलिए बहुत से विद्वानों ने सेमाइट्स को एक विशेष वंश का माना है, आधुनिक Anthropologist सेमेटिक वंश को स्वीकार नहीं करते। Anthropologists ने इस बात पर भी संदेह व्यक्त किया है कि सेमाइट्स कभी आने वाली जाति के लोग भाषा, मनोविज्ञान परम्परा तथा धार्मिक विचार आदि की दृष्टि से एक था।

प्राचीन ऐतिहासिक काल में सेमेटिक भाषा बोलने वाले लोग Arabian Peninsula और इससे सटे उत्तर सीरिया की मरुभूमि एवं अर्द्धचन्द्राकार उपजाऊ हिस्सा (Fertile Crescent) तथा Mesopotamia के क्षेत्रों में निवास करते थे, यह क्षेत्र चारों ओर से समुद्र एवं पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ था। कहा जाता है कि सेमाइट्स मुख्यतः खानाबदोश कबीले थे और इस क्षेत्र के मध्य भाग में निवास करते थे। कुछ समय बाद ये लोग एक जगह से दूसरी जगह जाकर बसने लगे। इस क्रम में वह युद्ध और शान्ति दोनों का सहारा लेते थे। वे लोग खास तौर से Mesopotamia और Syria के उपजाऊ हिस्सों में बसते थे। इन लोगों ने अपनी नई जगहों में प्रवेश किया कि विभिन्न कालों में इनका स्वरूप बदलता रहा। 4th Millenium B.C में ये लोग Mesopotamia में Akkadian के नाम से, 3rd और 2nd Cent. B.C में Mesopotamia और Syria में पश्चिमी सेमाइट्स के नाम से, 12th Cent. B.C में Syria के अर्द्धचन्द्राकार उपजाऊ हिस्से में Aramaens के नाम से, 2nd Cent. B.C से 6th Cent. A.D तक Nasulaens के नाम से तथा अन्य Pre-Islamic Arabs एवं 7th Cent. A.D से वे लोग Muslim Arabs के नाम से जाने जाते थे।

खानाबदोश सेमाइट्स तथा कृषकों के बीच आपसी सम्पर्क बढ़ने लगा। नगर के बाहर गाँव और बाजारों में किसानों और खानाबदोशों में भेंट होती थी, जहाँ ये लोग आपस में सामानों की खरीद-बिक्री करते थे। खानाबदोश किसानों से प्रभावित होकर निवास स्थल मरुभूमि लौटते थे, परन्तु धीरे-2 ये खानाबदोश अकेले एवं समूहों में काम की खोज में गाँव में आकर बसने लगे तथा जब वहाँ अव्यवस्था उत्पन्न हुई तब परिस्थिति का लाभ उठाकर उन लोगों ने नगरों को लूटा और उस पर

पर अपना अधिकार कर लिया तथा वहीं बस गए। इस प्रकार Semitic लोगों का उपजाऊ भूमि में आकर बसना अचानक नहीं हुआ बल्कि यह क्रिया क्रमशः होती रही। धीरे-2 इन लोगों ने मूल निवासियों की कमजोरी का लाभ उठाकर इस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इसलिए सीरिया को उप. भूमि या Arabian Peninsula का नाम अर्द्धचन्द्राकार बोला जाने लगा। सामान्यतः Semites का पहला Semitic मूल स्थान उजागर है, सम्भवतः ये लोग वहीं Pre-Historic age से ही रहते थे किन्तु उनकी स्पष्ट जान-कारी हमें तबसे मिलती है जब इन लोगों ने सीरिया और सैनिक तथा राजनीतिक रूप से मजबूत हो गए तथा इनका समाज सभ्य समझा जाने लगा।

Mesopotamia में Semites का प्रवेश कब और कैसे हुआ यह प्रश्न अभी तक अस्पष्ट एवं विवादास्पद है। Early Dynastic Period के Semitic नामों से यह जानकारी मिलती है कि दक्षिण में सुमेरियनों की अपेक्षा सेमेटिक अल्पसंख्यक थे, किन्तु ये अधिक सक्रिय एवं शक्तिशाली थे। लेकिन Sargon के अभ्युदय के बाद से Mesopotamia के पश्चिमोत्तर Semites "AKKADIAN" के नाम से जाने जाते थे।

अक्कड़ के Sargon का मूलवंश अस्पष्ट है। उसने आक्रामकतापूर्वक 60 वर्ष तक अपनी सत्ता का विस्तार किया। एक छोटे शासक के रूप में शुरुआत की और प्राचीन विश्व के महानतम शासकों में एक बन गया। उसने "लुगाल जगीसी" को पराजित किया और बेबी-लोनिया में Semitic शासन की नींव रखी। Sargon को Semitic इतिहास का राष्ट्रीय नायक माना जाता है। उसने अपनी विजय और एकीकरण की नीति द्वारा मेसोपोटामिया की पृष्ठभूमि तैयार की। Sargon का आधिपत्य इतना प्रभावी था कि उसका शासनकाल Sargon age कहलाता है।

Sargon महान विजेता था। उसके सैन्य अभियानों का प्रमाण हमें तत्कालीन अभिलेखों और Babylonia के प्रकाशित कागजों से प्राप्त होते हैं जिन में अभिलेखों के अनुसार Sargon ने भूमध्यसागर पार किया और सभी प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित कर दक्षिण पूर्वी द्वीपसमूहों पर तीन वर्षों तक शासन किया। एक अन्य अभिलेख से पता चलता है कि Sargon ने अपनी सत्ता फारस की खाड़ी तक दृढ़ कर ली थी। सम्भ-वतः एलाम भी उसके साम्राज्य में शामिल हो गया था।

उसने उत्तर-पूर्व में Babylonia के क्षेत्रों को जीता। साथ ही जागरोस की पहाड़ी इलाकों को भी अपने साम्राज्य में मिलाया। पूर्व में उसने Asia Minor तक अपनी सीमा का विस्तार किया। कुछ राजाओं ने तो उसके आक्रमण के भय से खुद ही आत्म समर्पण कर दिया।

Breasted के अनुसार Sargon ने भूमध्यसागर को पार कर 'साइप्रस' और 'क्रीट' द्वीप समूह पर भी हमला किया था। उसका हमला 'एलम' पर भी हुआ और उसने सूसा, अविसी को अपने कब्जे में कर लिये। Babylonia के नगर राज्य को सीधे उसने और लगाश को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

Sargon इन विजय अभियानों से भी सन्तुष्ट नहीं हो सका और उसने फरात नदी के किनारे के राज्यों को रौंदते हुए लबनान तक पहुँच गया। [illegible] पर उसने अपनी विजय पताका फहराया, किन्तु उसने वहाँ के स्थानीय सेनाओं का आदर किया। अपने शासन के 12वें वर्ष तक उसने पश्चिम के सभी राज्यों को जीत लिया था।

Sargon के साम्राज्य विस्तार के संदर्भ की पारम्परिक कथा में कल्पना भले ही हो इतना जरूर है कि उसका साम्राज्य पश्चिम में Syria से पूर्व में फारस की खाड़ी तक विस्तृत था। अगर उसके इतने सारे सैन्य अभियानों पर संदेह भी किया जाए तो भी शेष कुछ ही अभियान इतना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि वह एक महान विजेता था।

Sargon न केवल एक महान विजेता ही था बल्कि एक दूरदर्शी और कुशल प्रशासक भी था। अगर वह चाहता तो विजित क्षेत्रों को तबाह कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने विजित राजाओं के साथ मानवतापूर्ण व्यवहार किया। पराजित शासक अपने क्षेत्र में अपने पदों पर बने रहे। उन्हें सारगोन को वार्षिक उपहार देना पड़ता था। पराजित राज्यों के साथ सहिष्णुतापूर्ण नीति अपनाकर उसने अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया।

Sargon ने अपने विस्तृत साम्राज्य को संगठित और सुव्यवस्थित प्रशासन द्वारा एकता प्रदान की। उसने साम्राज्य के अन्तर्गत शान्ति और सुरक्षा की स्थिति पर पर्याप्त ध्यान दिया। उससे व्यापारियों का कारवाँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना किसी व्यवधान के आने जाने लगा। स्वभावतः व्यापार और वाणिज्य का पर्याप्त विकास हुआ। उसने विजित क्षेत्रों पर बराबर केन्द्रीय नियंत्रण बनाए रखा। परिणामस्वरूप विद्रोह की सम्भावनाएं समाप्त हो गई। साम्राज्य अक्षुण्ण बना रहा।

Sargon एक महान निर्माता भी था। उसने

उसने विशाल अभियानों के साथ-2 सांस्कृतिक विकास को भी प्रोत्साहन दिया। साम्राज्य में कई इमारतों और मंदिरों का निर्माण करवाया। राजकीय रीति तथा धार्मिक प्रथा को कायम रखा। धर्म पर किसी तरह का आघात नहीं किया गया। उसने सुमेरियनों के लेखों और धार्मिक पुस्तकों का Semetic भाषा में अनुवाद करवाया। यातायात और संचार के साधनों के विकास में भी अभिरुचि थी।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि Sargon प्राचीन विश्व का महानतम साम्राज्य विजेता था। उसके शासनकाल में ही पहली बार सुमेर साम्राज्य की सीमा उत्तर-पश्चिम में भूमध्यसागर से दक्षिण में फारस की खाड़ी तक पहुँच गई थी। उसने भूमध्यसागर के प्रदेशों जगरोस, टोरस, आदि पर्वतीय प्रदेशों, मेसोपोटामिया के विभिन्न नगरों तथा एलम और अन्य प्रदेशों को जीत कर नगर राज्य को साम्राज्य का रूप दिया तथा वृहत Mesopotamia की पृष्ठभूमि तैयार की। उसने वाणिज्य-व्यापार को बढ़ावा दिया। उसके शासनकाल में कला स्थापत्य और साहित्य कला भी विकसित हुई। विजित शासकों के साथ बड़ा ही सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार किया। इन्हीं उपलब्धियों के कारण उसे प्रथम महान शासक माना जाता है और उसके शासनकाल को स्वर्णिम युग की संज्ञा दी गई है।